Eklavya University

Master of Arts

(Buddhist and Pali Studies)

Curriculum

(2020-2021 admitted students)

Master of Arts- Buddhist and Pali Studies

VISION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

Eklavya University, will transform lives and communities through learning.

MISSION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

- Nurture achievers in life and careers through a value based, industry relevant and future ready education.
- Emphasize research, interdisciplinary learning, and practical hands on education.
- Equip every student with the required social and technical skills to achieve employment generation.
- Provide a holistic education deeply rooted in the ways of the traditional Gurukul system.
- Bring quality education within the reach of every individual, by committing to the achievement and maintenance of excellence in education, research and innovation.
- Create and disseminate knowledge through research and creative inquiry.
- Serve students by teaching them problem solving, leadership and teamwork skills, lateral thinking, commitment to quality and ethical behaviour.
- Create a diverse community, open to the exchange of ideas, where discovery, creativity, and personal and professional development is encouraged and can flourish.
- Contribute to the social fabric and economic health of the Bundelkhand region, the state and the country at large, by enhancing and facilitating economic empowerment, providing equal opportunities and employment generation.

VISION STATEMENT OF DEPARTMENT

Transforming life through excellence in education and knowledge.

MISSION STATEMENT OF DEPARTMENT

Buddhist and Pali Studies department's mission is to develop innovative, globally competitive and socially responsible scholar and leaders.

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

Master of Arts - Buddhist and Pali Studies

PROGRAMME EDUCATIONAL OBJECTIVES (PEOs)

1. After completion of Post graduation in Buddhist and Pali studies, students are provided with the opportunity to study in a specific area in Buddhist and Pali Studies.
2. Critical and comparative study in the subject is encouraged.
3. The subject undertaken helps the students to explore himself/herself and be useful to the society at large.

Master of Arts - Buddhist and Pali Studies

PROGRAMME OUTCOMES (POs)

1. Achieving scholarship in specific area of Buddhist Philosophy and Pali Language.

2. The subject learning will have personal and social utility.

3. Many employment opportunities for teaching and research.

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

Master of Arts - Buddhist and Pali Studies

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PSOs)

1. Provide adequate knowledge of Pali language and Leterature.
2. Understanding ancient scriptures written in Pali, Prakrit, Sanskrit & Apabhramsha.
3. Acquire adequate knowledge of ancient Indian culture and society.
4. Gain competencies and professional skills for teaching and conducting Research.

Master of Arts- Buddhist and Pali Studies

CREDIT STRUCTURE

Category-wise Credit Distribution

Courses	Credits
Programme Core courses	**36**
Programme Electives	**12**
Project	**20**
Subjective presentation & Comprehensive Viva	**12**
Total	**80**

Course code	History of Pali Language and Literature, Paper –I	L	T	P	C
MBUPA20Y101	पालि भाषा और साहित्य का इतिहास, प्रश्न पत्र–1	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- पालि भाषा के इतिहास की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में पालि साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- पालि भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- पालि भाषा के इतिहास और परम्परा का ज्ञान होना।
- पालि भाषा की विभिन्न विधाओं की समझ विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में भाषा के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- पालि के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-I — **20**

पालि भाषा का इतिहास –

- पालि भाषा का वैशिष्ट्य।
- पालि भाषा का उद्भव एवं विकासक्रम।
- पालि की व्युत्पत्ति एवं अर्थ।
- पालि भाषा का स्वरूप
- संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं से उसका अन्तःसंबंध।

Unit -2 — **15**

पालि साहित्य का इतिहास –

- भारतीय वाङ्मय में पालि साहित्य का स्थान।
- पालि साहित्य का उद्भव एवं विकास।
- पालि साहित्य का विस्तार।

- पालि साहित्य का वर्गीकरण।

Unit-3	18

बौद्ध संगीतियाँ –

- प्रथम संगीति।
- द्वितीय संगीति।
- तृतीय संगीति।
- चतुर्थ संगीति।
- पंचम संगीति।
- षष्ठ संगीति।

Unit-4	19

पालि साहित्य की अन्य विधाओं का इतिहास –

- त्रिपिटक साहित्य का परिचय।
- अनुपिटक साहित्य का परिचय।
- अट्ठकथा एवं टीका साहित्य का परिचय।
- वंस साहित्य का परिचय।
- काव्य साहित्य का परिचय।
- व्याकरण, छन्द, कोश साहित्य का परिचय।

Unit-5	18

भारतीय वाङ्मय में पालि साहित्य का स्थान –

- प्राकृत वाङ्मय और पालि साहित्य।
- संस्कृत वाङ्मय और पालि साहित्य।
- विश्व वाङ्मय और पालि।
- अन्य भाषाओं का साहित्य और पालि।

 # Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures

Text/Reference Books

1. पालि साहित्य का इतिहास – भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2008
2. पालि भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, जगतगुरु रामानन्दाचार्य सं. विश्वविद्यालय, जयपुर, 2015
3. पालि साहित्य का इतिहास – महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 1963
4. पालि साहित्य का इतिहास, डॉ. कोमलचन्द्र जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1987
5. पालि भाषा और साहित्य – डॉ. इन्द्रचंद शास्त्री, दिल्ली विश्वविद्यालय, सन् 1987
6. पालि साहित्य का इतिहास – प्रभा अग्रवाल।
7. बौद्ध संस्कृति – महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता,
8. बौद्ध संस्कृति – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर,

Course code	Linguistics and Pali Grammar, Paper – II	L	T	P	C
MBUPA20Y102	भाषाविज्ञान और पालि व्याकरण, प्रश्न–पत्र–2	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- भाषाविज्ञान की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में भाषाविज्ञान अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि भाषा के व्याकरण की प्रवृत्तियों के प्रति समझ विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि भाषा की भाषा वैज्ञानिक विशेषताओं का ज्ञान होना।
- पालि भाषा की व्याकरणिक दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- पालि भाषा की प्रायोगिक और रूपगत विशेषताओं का ज्ञान होना।
- विभिन्न देश–भाषाओं की समझ विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा वैज्ञानिक कौशल का विकास होना।
- छात्रों में भाषा के व्याकरण वैशिष्ट्य जानकारी होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा की व्याकरणिक समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-1 — **18**

भाषाविज्ञान एवं उसका सामान्य परिचय–

- भाषाविज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व।
- भाषाविज्ञान की शाखाएं।
- भाषा में परिवर्तन के प्रमुख घटक।
- भाषा परिवर्तन की दिशाएँ।

Unit - 2 — **16**

पालि भाषाविज्ञान–

- समीकरण, विषमीकरण, घोषीकरण, अघोषीकरण।
- अल्पप्राणीकरण, महाप्राणीकरण, ऊष्मीकरण, कण्ठ्यीकरण।
- तालव्यीकरण, मूर्धन्यीकरण, दन्त्यकरण, ओष्ठ्यीकरण, अनुस्वार एवं अनुनासिक।
- स्वराघात, बलाघात, आगम लोप, विकार।

Ashutosh

- वर्ण विपर्यय, स्वरभक्ति, अपश्रुति, य–श्रुति।

Unit-3	20

वर्ण विचार –

- स्वर व व्यंजन।
- स्वर परिवर्तन – ह्रस्व स्वरों का दीर्घीकरण, दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण।
- सरल व्यंजन परिवर्तन
- कठिन व्यंजन परिवर्तन
- व्यंजन आगम और स्वर आगम।
- वर्ण विपर्यय।

Unit-4	19

संधि प्रकरण –

- स्वरसंधि
- व्यंजन संधि
- निग्गहीत (अनुस्वार) सान्धि।

समास प्रकरण –

- समास की परिभाषा
- समास के भेद–प्रभेद।
- समासों के विविध पालि प्रयोग।

कारक प्रकरण –

- कारक की परिभाषा।
- कारक के भेद–प्रभेद।
- विभक्तियाँ एवं सुवन्त।
- शब्द रूप – स्वरांत, व्यंजनांत, सर्वनाम, संख्यावाची शब्द।

क्रिया प्रकरण –

- धातुरूप
- वर्तमान, भूतकाल, भविष्यकाल और विधि क्रिया पदों के रूप।

Unit-5	17

कृदन्त और तद्धित प्रकरण –

- **कृत्प्रत्यय** – कृत्य, कृत् और उणादि।
- **तद्धित प्रकरण**– सामान्य प्रत्यय।
- **अव्यय प्रकरण**– अव्यय के सोदाहरण भेद–प्रभेद।
- **लिंग–विचार**–लिंगानुशासन।
- **स्त्री प्रत्यय** तथा उसके प्रयोग।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/ Reference Books

1. पाली प्रबोध – लेखक पं. आद्यादत्त ठाकुर, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, सं. 1985 वि.।
2. पालि व्याकरण – भिक्षु धर्म रक्षित, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी, सं. 2014।
3. कच्चायन पाली व्याकरण – सतीशचन्द्र विद्याभूषण, कोलकाता महाबोधि सोसाइटी, 1901।
4. कच्चायन व्याकरण – भदन्त आचार्य कच्चायन महास्थविरप्रणीत, सम्पादक : लक्ष्मीनारायण तिवारी, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
5. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र– कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997
6. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण : 1969
7. पालि साहित्य का इतिहास –भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2008
8. पालि भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, जगतगुरु रामानन्दाचार्य सं. विश्वविद्यालय, जयपुर, 2015
9. पालि साहित्य का इतिहास –महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 1963
10. पालि साहित्य का इतिहास, डॉ. कोमलचन्द्र जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1987
11. पालि भाषा और साहित्य – डॉ. इन्द्रचंद शास्त्री, दिल्ली विश्वविद्यालय, सन् 1987
12. पालि साहित्य का इतिहास – प्रभा अग्रवाल।
13. पालि महाव्याकरण (मोग्गल्लान) – लेखक जगदीश काश्यप, महाबोधि सभा, सरनाथ, वाराणसी, 1940 ई.।
14. पालि प्रवेशिका : डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।
15. पालि निबन्धावली : हरिशंकर शुक्ला, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।

Ashisha

Course code	Pali Tripitaka Sahitya. Paper – III	L	T	P	C
MBUPA20Y103	पालि त्रिपिटक साहित्य, तृतीय प्रश्न–पत्र–3	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- त्रिपिटक साहित्य की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में त्रिपिटक साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि की विशेषताओं से परिचित कराना।
- ज्ञान की विविध विधाओं में दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि त्रिपिटकों की विशेषताओं का ज्ञान होना।
- पालि भाषा की प्रवाहगत सूक्ष्मता का पता चलना।
- पालि की परम्परा का ज्ञान कराना।
- पालि के टीका साहित्य में निहित तत्त्वों का ज्ञान कराना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में त्रिपिटक के अध्ययन के प्रति कुशलता का विकास होना।
- छात्रों में पारम्परिक ज्ञान के उपयोग की सोच विकसित होना।
- पालि के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियाँ एवं प्रयोगों का विकास होना।
- ज्ञान की प्राचीन परम्परा को समझकर नवीन विचार क्षमता का विकास होना।
- त्रिपिटकों के गूढ़ ज्ञान का अभ्यास कराना।

Unit-1 — **17**

त्रिपिटक की परम्परा –

- त्रिपिटक संकलन : एक सुदीर्घ परम्परा।
- त्रिपिटकों की प्रामाणिकता।
- त्रिपिटक का विभाजन
- त्रिपिटक का कालानुक्रम
- त्रिपिटकों का महत्त्व एवं उनकी विशेषताएँ।
- त्रिपिटक के विविध संस्करण।

Unit - 2 — **19**

विनय पिटक –

- त्रिपिटक में विनय पिटक का स्थान।
- विनय पिटक की विषय वस्तु का परिचय।

- सुत्त विभंग
- महावग्ग–चुल्लवग्ग
- परिवार।

Unit-3	20

सुत्तपिटक :

- त्रिपिटकों में सुत्तपिटक का स्थान।
- सुत्तपिटक की विषय वस्तु एवं महत्त्व।

ग्रन्थों का विषय परिचय –

- दीघनिकाय।
- मज्झिमनिकाय।
- संयुक्तनिकाय।
- अंगुत्तर निकाय।

Unit-4	16

खुद्दकनिकाय : विषय वस्तु।

- खुद्दकपाठ, धम्मपद।
- उदान, इतिवुत्तक।
- सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतबत्थु।
- थेरगाथा, थेरीगाथा।
- जातक, निद्देस, पटिसम्भिदामग्ग।
- अपदान, बुद्धवंस और चरिया पिटक।

Unit-5	18

अभिधम्मपिटक : विषय वस्तु।

- धम्मसंगणि।
- विभंग।
- धातुकथा।

- पुग्गलपंञत्ति।
- कथावस्तु।
- यमक।
- पट्ठान।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text/ Reference Books			

1. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास : डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास : डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, आलोक प्रकाशन, नागपुर।
3. पालि साहित्य का इतिहास –भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2008
4. पालि भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, जगतगुरु रामानन्दाचार्य सं. विश्वविद्यालय, जयपुर, 2015
5. पालि साहित्य का इतिहास –महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 1963
6. पालि साहित्य का इतिहास, डॉ. कोमलचन्द्र जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1987
7. पालि भाषा और साहित्य – डॉ. इन्द्रचंद शास्त्री, दिल्ली विश्वविद्यालय, सन् 1987।

Course code	Bauddha Darshan and Yoga. (Elective) Paper – IV	L	T	P	C
MBUPA20Y104	बौद्ध दर्शन और योग (ऐच्छिक पत्र)– प्रश्न पत्र–4	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- बौद्धदर्शन का समग्र और व्यापक ज्ञान कराना।
- छात्रों में बौद्धदर्शन के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- ध्यान–योग की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- ध्यान–योग में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- दार्शनिक परम्पराओं का ज्ञान होना।
- बौद्धदर्शन की विशेषताओं से परिचित होना।
- पर्यावरण संरक्षण के बौद्धदर्शन की देन से परिचित होना।
- आदर्श जीवन के लिए योग की उपयोगिता का पता लगना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में विचार कौशल का विकास होना।
- छात्रों में दार्शनिक ज्ञान के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- स्वस्थ्य जीवन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- स्वास्थ्य समस्याओं का निदान में ध्यान–योग की क्षमता का ज्ञान होना।

Unit-1 — **16**

बौद्ध दर्शन –

- अहिंसा
- चार आर्य सत्य
- अष्टांगिक मार्ग
- त्रिरत्न की अवधारणा।
- प्रज्ञा, सील, समाधि का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

Unit - 2 — **18**

- बौद्ध धर्म में पर्यावरण संरक्षण।
- बौद्ध दर्शन में पर्यावरण संरक्षण।
- पर्यावरण के प्रमुख तत्त्व।

पर्यावरण संरक्षण से लाभ।	
Unit-3	**17**
आधुनिक सन्दर्भ में बौद्ध धर्म–दर्शन की उपयोगिता– • बौद्ध धर्म–दर्शन का महत्त्व और विशेषताएँ। • बौद्ध आचार की विशेषताएँ। • बौद्ध धर्म और स्वास्थ्य विज्ञान। • नशा मुक्ति, व्यसन मुक्ति और बौद्ध धर्म	
Unit-4	**20**
बौद्ध दर्शन में ध्यान – • बौद्ध परम्परा में ध्यान की अवधारणा। • बौद्ध परम्परा में ध्यान का महत्त्व। • ध्यान एवं योग का सम्बन्ध। • ध्यान के भेद–प्रभेद। • ध्यान की मुद्रायें।	
Unit-5	**19**
बौद्ध योग – • बौद्ध योग का सामान्य परिचय। • बौद्ध योग की परम्परा। • बौद्ध परम्परा में योग का विकास। • बौद्ध परम्परा में योग के भेद–प्रभेद।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/ Reference Books

1. बौद्ध–दर्शन मीमांसा – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, चौक वाराणसी।
2. बौद्ध दर्शन – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी, 1946
3. बौद्ध धर्म दर्शन – आचार्य नरेन्द्र देव, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2004
4. बौद्ध धर्म दर्शन – आचार्य शिवपूजन सहाय।
5. बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, 1944 ।
6. बुद्ध और बौद्ध धर्म : आचार्य चतुरसेन शास्त्री, हिन्दी साहित्य मण्डल, दिल्ली।

Course code	Buddhist Philosophical Literature : Pali (Elective), Paper -IV	L	T	P	C
MBUPA20Y105	बौद्ध दार्शनिक साहित्य : पालि (ऐच्छिक पत्र)– प्रश्न पत्र–4	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- पालि भाषा के दार्शनिक साहित्य की व्यापक जानकारी देना।
- छात्रों में पालि भाषा और दर्शन के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि भाषा के दार्शनिकों को जानने–समझने की जमीन तैयार करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि भाषा की दार्शनिक क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- पालि भाषा विषयक दार्शनिकों के विचारों की सूक्ष्मता का पता चलना।
- दार्शनिक ग्रन्थों में निहित आचार सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी देना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में दार्शनिक समझ का विकास होना।
- छात्रों में दार्शनिक विचारों के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- विचार के क्षेत्र में नूतन तकनीक एवं प्रयोगों का विकास होना।
- विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- बौद्ध परम्परा के दार्शनिक ग्रन्थों में निहित विचारों का गूढ़ ज्ञान का कराना।

Unit-1 — **18**

बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य का उद्भव एवं विकास–

- बौद्ध दर्शन का उद्भव।
- बौद्ध दर्शन का विकासक्रम।
- बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य का उद्भव।
- बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य का विकास।
- बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य की परम्परा।

Unit - 2 — **16**

बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य के ग्रन्थकार –

- गौतमबुद्ध
- भंते आनन्द
- नागसेन
- कच्चायन

- बुद्धघोष

Unit-3	20

बौद्ध दार्शनिक पालि साहित्य के ग्रन्थ –

- बुद्धवचन
- त्रिपिटक
- महावग्ग
- धम्मसंग्गणि
- नेत्तिपकरण (कच्चान)
- अट्ठकथा (बुद्धघोष)
- विसुद्धिमग्ग (बुद्धघोष)
- मिलिंदपञ्हो (नागसेन)

Unit-4	19

पालि साहित्य में वर्णित प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत –

- क्षणिकवाद
- अनात्मवाद
- प्रतीत्य समुत्पाद
- अनीश्वरवाद
- पंचशील
- पंचस्कन्ध

Unit-5	18

अन्य दार्शनिक सिद्धांतों से बौद्ध दार्शनिक सिद्धांतों की तुलना –

- सांख्यदर्शन।
- न्यायदर्शन।
- वैशेषिक दर्शन।
- मीमांसा दर्शन।
- जैन दर्शन।
- चार्वाक दर्शन।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/ Reference Books

1. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास : डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, हिन्दी समिति सूचना विभाग।
2. बौद्ध–दर्शन मीमांसा – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, चौक वाराणसी।
3. बौद्ध संस्कृति का इतिहास : डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, आलोक प्रकाशन, नागपुर।
4. बौद्ध धर्म दर्शन – आचार्य नरेन्द्र देव, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2004
5. पालि साहित्य का इतिहास –भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2008
6. बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, किताब महल इलाहाबाद, 1944 ।
7. बुद्ध और बौद्ध धर्म : आचार्य चतुरसेन शास्त्री, हिन्दी साहित्य मण्डल दिल्ली।
8. पालि भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, जगतगुरु रामानन्दाचार्य सं. विश्वविद्यालय, जयपुर, 2015

Ashishay

Course code	Buddhist Philosophical Literature : Sanskrit (Elective), Paper – IV	L	T	P	C
MBUPA20Y106	बौद्ध दार्शनिक साहित्य : संस्कृत (ऐच्छिक पत्र) – प्रश्न पत्र – 4	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- संस्कृत भाषा के दार्शनिक साहित्य की सम्यक् जानकारी देना।
- छात्रों में संस्कृत भाषा और दर्शन के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के दार्शनिकों को जानने समझने की आधारभूमि तैयार करना।
- संस्कृत भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की दार्शनिक क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- संस्कृत भाषा विषयक दार्शनिकों के विचारों की सूक्ष्मता का पता चलना।
- दार्शनिक ग्रन्थों में निहित आचार सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी देना।
- वैचारिक क्षमता को विकसित कराना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में दार्शनिक समझ का विकास होना।
- छात्रों में दार्शनिक विचारों के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- विचार के क्षेत्र में नूतन तकनीक एवं प्रयोगों का विकास होना।
- अन्य भारतीय दर्शनों के सिद्धान्तों का ज्ञान होना।
- बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थों में निहित विचारों का ज्ञान का होना।

Unit-1 — **17**

बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य का उद्भव एवं विकास–

- बौद्ध दर्शन का उद्भव।
- बौद्ध दर्शन का विकासक्रम।
- बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य का उद्भव।
- बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य का विकास।
- बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य की परम्परा।

Unit-2 — **18**

बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य के ग्रन्थकार –

- नागार्जुन के ग्रन्थ
- असंग की कृतियाँ
- वसुबन्धु की रचनाएँ
- धर्मकीर्ति की कृतियाँ

• दिग्नाङ् की कृतियाँ	
Unit-3	**20**
बौद्ध दार्शनिक संस्कृत साहित्य के ग्रन्थ – • नागार्जुन • असंग • वसुबन्धु • धर्मकीर्ति • दिग्नाङ्	
Unit-4	**16**
संस्कृत साहित्य में वर्णित प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत – • क्षणिकवाद • अनात्मवाद • प्रतीत्य समुत्पाद • अनीश्वरवाद • पंचशील • पंचस्कन्ध	
Unit-5	**18**
अन्य दार्शनिक सिद्धांतों से बौद्ध दार्शनिक सिद्धांतों की तुलना – • सांख्यदर्शन। • न्यायदर्शन। • वैशेषिक दर्शन। • मीमांसा दर्शन। • जैन दर्शन। • चार्वाक दर्शन।	

Ashishay

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text/ Reference Books			

1. संस्कृत साहित्य का बृहद् इतिहास – (भाग – 4, बौद्ध साहित्य), सम्पादक : आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – हंसराज अग्रवाल, हंसा प्रका ान, दिल्ली, 1950
3. बौद्ध संस्कृत ग्रन्थावली : मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा।
4. संस्कृत बौद्ध साहित्य में इतिहास और संस्कृति – प्रो. अंगनेलाल, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2006।
5. बौद्ध साहित्य की संस्कृत झलक : परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद।
6. बौद्ध–दर्शन मीमांसा – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, चौक वाराणसी।
7. पालि साहित्य का इतिहास –भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2008।
8. पालि भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, जगतगुरु रामानन्दाचार्य सं. विश्वविद्यालय, जयपुर, 2015

Ashish

आशीष जैन

Course code	Research Methodology /Project Work , Paper – V	L	T	P	C
MBUPA20Y107	**शोध–प्रविधि / परियोजना कार्य, प्रश्न पत्र – 5**	4	0	6	10
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- शोध की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में पालि साहित्य सम्बन्धी शोध–खोज के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- दर्शन के क्षेत्र में शोध करने हेतु कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- दर्शन और जैन दर्शन में दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- भाषा और दर्शन में शोध के आयामों का ज्ञान कराना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- भाषा कौशल का विकास होना।
- विषय के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- शोध के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- शोध सम्बन्धी समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-1	18

शोध का स्वरूप : सैद्धान्तिक पक्ष

- शोध का प्रयोजन
- शोध की व्युत्पत्ति और परिभाषा
- शोध : तत्त्व, क्षेत्र, दृष्टि, पद्धति, उपस्थापन
- शोध के प्रयोजन
- शोध के प्रकार– 1. साहित्यिक शोध
  2. लोक साहित्यिक शोध
  3. अन्तःशास्त्रीय शोध
  4. तुलनात्मक शोध

Unit-2	16

शोध पद्धतियाँ

- वर्णनात्मक पद्धति
- ऐतिहासिक पद्धति
- तुलनात्मक पद्धति
- सर्वेक्षण आधारित पद्धति
- गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धति

- लोकतात्त्विक पद्धति
- भाषा केन्द्रित पद्धति
- आलोचनात्मक पद्धति
- मौखिक पद्धति

Unit-3	20

शोध की प्रक्रिया

- विषय का चयन
- विषय का निर्धारण : संकल्पना और महत्त्व
- शोध की समस्या (विषयगत)
- शोध की रूपरेखा
- सामग्री संकलन, विश्लेषण
- सामग्री संकलन के स्रोत (प्राथमिक, द्वितीयक तथा प्रकाशित–अप्रकाशित आदि)
- पुस्तकालय, इंटरनेट, वेबसाइट, फील्ड वर्क
- कार्ड बनाना, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सामग्री का विवेचन–विश्लेषण

Unit-4	19

शोध की प्रतिपादन पद्धति

- सामग्री का विभाजन तथा संयोजन (अध्याय, उपशीर्षक और अनुपात)
- तर्क–पद्धति, निरूपण और तत्त्वान्वेषण
- प्रामाणिकता : अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य
- उद्धरण और सन्दर्भोल्लेख (पाद टिप्पणी लेखन)
- भूमिका और उपसंहार लेखन
- परिशिष्ट (अतिरिक्त आवश्यक सूचनात्मक सामग्री संकलन)
    1. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
    2. पत्र–व्यवहार और अन्य का उल्लेख
    3. विषयों, नामों आदि की अनुक्रणिका, अन्य सामग्री (चित्र–स्केच) आदि प्रस्तुत करने की विधियाँ

Unit-5	17

कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान

- कम्प्यूटर : परिचय और महत्त्व
- कम्प्यूटर : संरचनात्मक स्वरूप
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय
- इंटरनेट समय मितव्ययिता का सूत्र
- इंटरनेट का ऐतिहासिक परिचय
- इंटरनेट कार्य प्रणाली और सुविधाएँ
- मशीनी अनुवाद

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		

Text/ Reference Books

1. साहित्यिक शोध के आयाम– डा. शशिभूषण सिंहल, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
2. शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि– डा. बैजनाथ सिंहल, दि मैकमिलन ऑफ इण्डिया लिमिटेड दिल्ली।
3. अनुसंधान–सत्येन्द्र, नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी।
4. शोध–प्रविधि, डा. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. शोध–प्रविधि, डा. हरिश्चन्द्र वर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।
6. कम्प्यूटर और हिन्दी–हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
7. कम्प्यूटर : सिद्धान्त और तकनीक, राजेन्द्र कुमार, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली।
8. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एण्ड आपरेटिंग गाइड, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली।

Course code	Subjective Presentation & Comprehensive Viva-voce, Paper – VI	L	T	P	C
MBUPA20Y108	विषय प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी, प्रश्न पत्र – 6	0	0	6	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में पालि साहित्य सम्बन्धी शोध–खोज के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- पालि भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- दर्शन के क्षेत्र में शोध करने हेतु कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- पालि भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- दर्शन और बौद्ध दर्शन में दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- भाषा और दर्शन में शोध के आयामों का ज्ञान कराना।

Student Learning Outcomes (SLO) :

- भाषा कौशल का विकास होना।
- विषय के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- शोध के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- शोध सम्बन्धी समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

	90

प्रत्येक विद्यार्थी को प्रश्न पत्र संख्या 1 से 5 तक पढे गये विषयों में से किसी एक विषय पर विषय प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी देनी होगी।

Ashish Jaya